ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class X

Subject- Hindi Second Language

लेखन कौशल (Writing Skill)

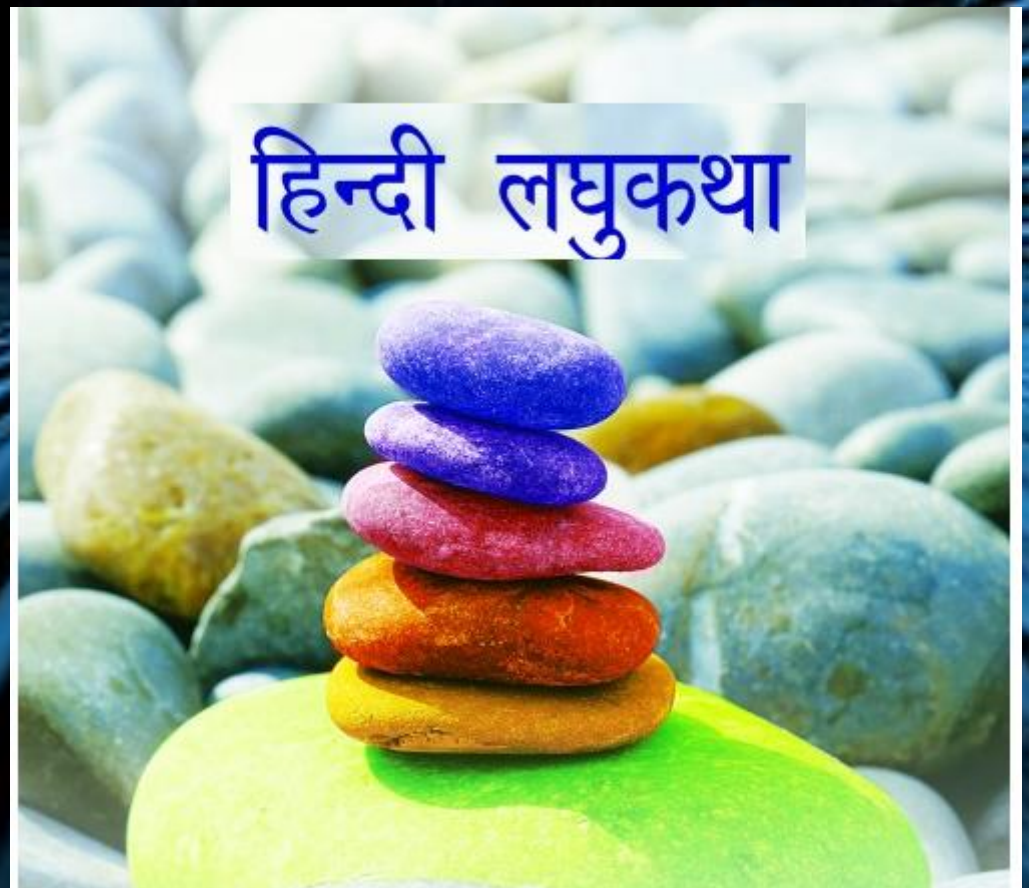

• By-Kailash Patro

©ISWK

लघु कथा लेखन क्या व किस प्रकार

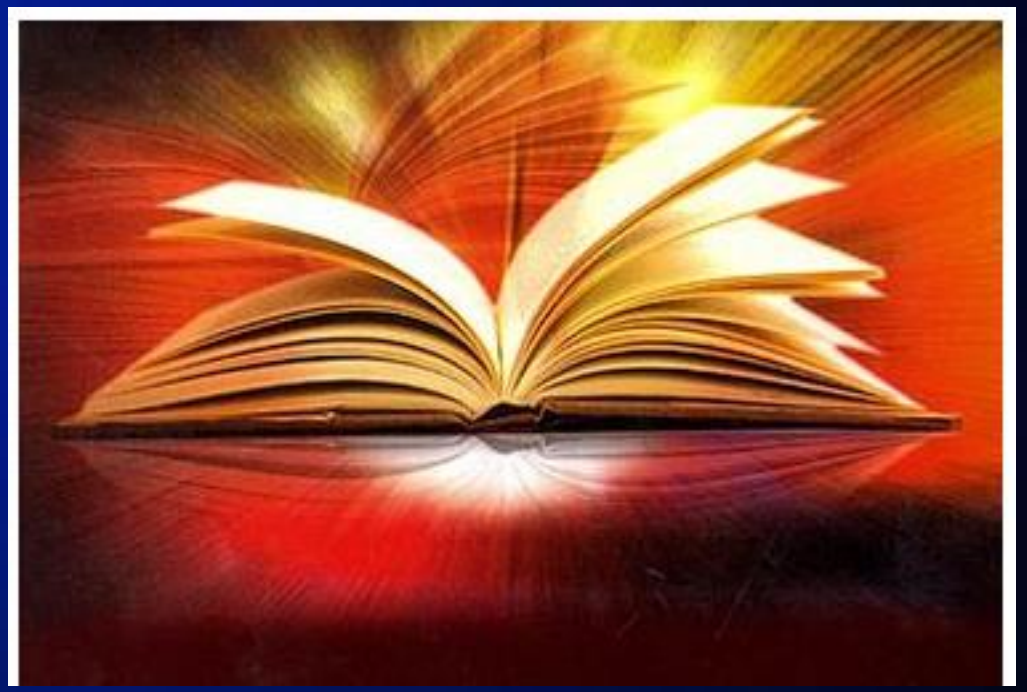

लघु कथा शब्द का निर्माण लघु और कथा से मिलकर हुआ है। अर्थात लघुकथा गद्य की एक ऐसी विधा है जो आकार में "लघु" है और उसमे " कथा" तत्व विद्यमान है। अर्थात लघुता ही इसकी मुख्य पहचान है। जिस प्रकार उपन्यास खुली आँखों से देखी गई घटनाओं का, परिस्थितियों का संग्रह होता है, उसी प्रकार कहानी दूरबीनी दृष्टि से देखी गयी किसी घटना या कई घटनाओं का वर्णन होती है। इसके विपरीत लघुकथा के लिए माइक्रोस्कोपिक दृष्टि की आवश्यकता पड़ती है

उदाहरण के तौर पर खाना खाते हुए किसी व्यक्ति का हास्यास्पद चेहरा, किसी धीर-गंभीर समझे जाने वाले व्यक्ति के ठुमके, किसी नन्हे बच्चे की सुन्दर पोशाक, किसी की निश्छल हँसी, मस्त सा किसी का चेहरा, किसी की उदास भाव-भंगिमा या विदाई के समय दूल्हा पक्ष के किसी व्यक्ति के आँसू। यही वे क्षण हैं जो लघु कथा हैं। लघु कथा उड़ती हुई तितली के परों के रंग देख-गिन लेने की कला का नाम है। स्थूल में सूक्ष्म ढूँढ लेने की कला ही लघु कथा है। भीड़ के शोर-शराबे में भी किसी नन्हें बच्चे की खनखनाती हुई हँसी को साफ़ साफ़ सुन लेना लघु कथा है। भूसे के ढेर में से सुई ढूँढ लेने की कला का नाम लघु कथा है।

दरअसल लघु कथा किसी बहुत बड़े परिदृश्य में से एक विशेष क्षण को चुरा लेने का नाम है। लघु कथा को अक्सर एक आसान विधा मान लेने की गलती कर ली जाती है, जबकि वास्तविकता बिलकुल इसके विपरीत है। लघु कथा लिखना गद्य साहित्य की किसी भी विधा में लिखने से थोड़ा मुश्किल ही होता है। क्योंकि रचनाकार के पास बहुत ज़्यादा शब्द खर्च करने की स्वतंत्रता बिलकुल नहीं होती।

लघु कथा लेखन के लिए आवश्यक बिन्दु

लघुकथा को लिखते समय इन बिन्दुओं का भी ध्यान रखना आवश्यक है -

- निरंतरता
- कथात्मकता
- प्रभावी संवाद / पात्रानुकूल संवाद
- रचनात्मकता/ कल्पनाशक्ति का प्रयोग
- जिज्ञासा / रोचकता

लघु कथाकारों के लिए स्मरण रखने योग्य महत्वपूर्ण बातें :
1 * आकार में लघु और कथा-तत्व से सुसज्जित रचना को ही लघुकथा कहा जाता है।
2 * पात्रों की संख्या पर नियंत्रण रखना चाहिए । दो , तीन पात्र पर्याप्त हैं ।
3 * शीर्षक का चुनाव सोच समझ कर करें। या तो शीर्षक ही कहानी को परिभाषित करता हो या कहानी शीर्षक को।
4* लघु कथा का अंत प्रभावशाली और विचारोत्तेजक होना चाहिए।
5 * एक लघु कथा अधिकतम 200 शब्दों से अधिक नहीं जानी चाहिए।
.

दी गई पंक्तियों को एक लघु कथा का रुप दीजिए ।

आज शाम से मैंने अपनी छत पर गुलेल और कुछ कंकर इकट्ठा कर रख लिए थे। कल सुबह सूरज निकलने के पहले वह फूल तोड़ने आएगा तो उसके सिर पर गुलेल से वार करूंगा। ०००

एक धनी सेठ था। उसका एक ही बेटा था। उसका नाम त्रिशूल था। त्रिशूल एक अच्छा लड़का था। वह कठिन परिश्रम करता था। वह अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम आता था। एक बार वह बुरी संगति में पड़ गया और लापरवाह हो गया। उसने स्कूल से भागना शुरु कर दिया।

°°°°°°°°°°°°°°°°

लघुकथा शब्द का निर्माण लघु और कथा से मिलकर हुआ है। अर्थात लघुकथा गद्य की एक ऐसी विधा है जो आकार में "लघु" है और उसमे "कथा" तत्व विद्यमान है। अर्थात लघुता ही इसकी मुख्य पहचान है।

लघुकथा एक ऐसी साहित्यिक विधा जिसमें कम से कम शब्दों में पाठक को हतप्रभ कर देना होता है।

जिस प्रकार उपन्यास खुली आँखों से देखी गई घटनाओं का, परिस्थितियों का संग्रह होता है, उसी प्रकार कहानी दूरबीनी दृष्टि से देखी गयी किसी घटना या कई घटनाओं का वर्णन होती है। इसके विपरीत लघुकथा के लिए माइक्रोस्कोपिक दृष्टि की आवश्यकता पड़ती है। इस क्रम में किसी घटना या किसी परिस्थिति के एक विशेष और महीन से विलक्षण पल को शिल्प तथा कथ्य के लेंसों से कई गुना बड़ा कर एक उभार दिया जाता है। किसी बहुत बड़े घटनाक्रम में से किसी विशेष क्षण को चुनकर उसे हाईलाइट करने का नाम ही लघुकथा है। इसे और आसानी से समझने के लिए शादी के एल्बम का उदाहरण लेना समीचीन होगा।

"जिए हुए क्षण के किसी टुकड़े को उसी प्रकार शब्दों के टुकड़े–भर में प्राण दे–देना लघुकथा है।"

“लघुकथा, मानव-जीवन के यथार्थ के किसी पक्ष की, छोटे आकार में कही गई कथा-रचना है।”

यदि सरल भाषा में कहा जाए, तब लघु कथा उपन्यास का एक लघु संस्करण है। इसके तत्व वही हैं जो किसी उपन्यास में होते हैंपात्र :, समायोजन, कथानक, द्व्न्द्व, और एक समाधान। किसी लघु कथा को लेखक के द्वारा अधिक सृजनशीलता की आवश्यकता होगी क्योंकि सीमित शब्दों की संख्या देखते हुए; आपको सुनिश्चित करना पड़ता है कि आपके पाठक संतुष्ट तथा वास्तव में प्रभावित हो जाएँ।

लघुकथा के प्रकार

मुख्यत: लघुकथा की तीन प्रचलित शैलियाँ हैं।

1-विवरणात्मक (बिना किसी संवाद के लिखी गई लघुकथा)

2. संवादात्मक (केवल संवादों में लिखी गई लघुकथा)

3. मिश्रित (विवरण एवं संवाद युक्त लघुकथा)

लघुकथा के मूल तत्व कौन हैं

1. **कथ्य,**
2. **पात्र**
3. **चरित्र-चित्रण**
4. **संवाद, उद्देश्य**

लघुकथा के लिए स्मरण रखने योग्य महत्वपूर्ण बातें :

1. केवल छोटे आकार की वजह से ही हरेक रचना लघुकथा नहीं होती। आकार में लघु और कथा-तत्व से सुसज्जित रचना को ही लघुकथा कहा जाता है।कहानी के संक्षिप्तिकरण का नाम लघुकथा नहीं है। यह एक स्वतंत्र विधा है और इसका अपना विशिष्ट शिल्प-विधान है।
2. अनावश्यक विवरण एवं विस्तार से हर हाल में बचा जाना चाहिए।
3. पात्रों की संख्या पर नियंत्रण रखना चाहिए, पाँच पंक्तियों की लघुकथा में यदि 6 पात्र डाल दिए गए तो पाठक उनके नामों मे ही उलझा रहेगा ।
4. शीर्षक का चुनाव सोच समझ कर करें। या तो शीर्षक ही कहानी को परिभाषित करता हो या कहानी शीर्षक को। शीर्षक को लघुकथा का प्रवेश द्वार माना गया है। एक कमज़ोर शीर्षक पाठक को रचना से दूर कर सकता है।
5. रचना में भाषण देने से गुरेज़ करें। जो कहना हो वह पात्रों या परिस्थितियों के माध्यम के कहना चाहिए। जब रचनाकार स्वयं पात्र की भूमिका में आ जाता है तो उसके पक्षपाती हो जाने के अवसर बहुत ज़्यादा बढ़ जाते हैं।

6. लघुकथाकार को चाहिए कि वह व्यंग्य को कटाक्ष का रूप देने का प्रयास करे, ताकि लघुकथा हास्यास्पद या चुटकुला बनने से बची रहे।
7. विषय में नवीनता लाने का प्रयास करना चाहिए। चलताऊ विषयों से बचना चाहिए। मसलन "कथनी-करनी में अंतर" बेहद पुराना और घिसा-पिटा एवं उबाऊ विषय हो चुका है और दुर्भाग्यवश अभी भी नए लघुकथाकारों का मनपसंद विषय है।
8. लघुकथा चूँकि एक विशेष क्षण को उजागर करने वाली एकांगी रचना होती है, अत: रचना में विभिन्न काल-खंडों अथवा अध्यायों हेतु लिए कोई स्थान नही है। लघुकथा में एक से अधिक घटनाओं का समावेश इस विधा के कोमल कलेवर के विपरीत है।
9. हालाकि यह सच है कि लघुकथा के अंत में कुछ न कुछ पाठक के विवेक पर छोड़ दिया जाता है, किंतु स्मरण रखना चाहिए कि स्पष्टता लघुकथा की जान मानी जाती है। अत: लघुकथा को पहेली बनने से भी बचाया जाना चाहिए।
10. लघुकथा में मनमर्ज़ी का अंत थोपने से बचना चाहिए। क्योंकि लघुकथाकार जब निर्णायक की भूमिका में आ जाता है, तब लघुकथा के बेजान और बेमानी होने के अवसर बहुत ज़्यादा बढ़ जाते हैं।
11. लघुकथा का अंत प्रभावशाली और विचारोत्तेजक होना चाहिए। यह बात याद रखनी चाहिए कि एक सशक्त अंत लघुकथा की कई कमियों को ढक दिया करता है।

लघुकथा का उदाहरण

बड़प्पन

चींटी को अपनी लघुता पर बड़ा दुख था । उसने पत्थर से पूछा, '' पत्थर क्या तुम सबसे बड़े हो?'' पत्थर ने कहा,' नहीं बहन, मुझसे बड़ा तो यह पहाड़ है।'' उसने पहाड़ से पूछा.' पहाड़, क्या तुम सबसे बड़े हो?' पहाड़ ने कहा, "नहीं बेटी, मुझसे बड़ी तो यह पृथ्वी है। चींटी ने पृथ्वी से पूछा,' माता, क्या तुम सबसे बड़ी हो?' पृथ्वी ने प्यार और ममता से चींटी की ओर देखते हुए कहा,' नहीं पुत्री, मुझसे बड़ा यह आकाश है।' चींटी ने आकाश की ओर ताक कर जिज्ञासा से पूछा,'' हे आकाश, क्या तुम सबसे बड़े हो?' आकाश ने चींटी की ओर स्नेह से देखकर अत्यंत विनम्रता से उत्तर दिया, '' नहीं, मैं तो सबसे छोटा हूँ । मेरा तो कोई आकार ही नहीं है। मैं तो तुमसे भी छोटा हूँ ।

चींटी संतुष्ट होकर चली गई । उसके हृदय से लघुता का भान समाप्त हो चुका था ।

पृथ्वी ने मुस्कुराकर आकाश से कहा,' स्वामी, धन्य है आपा बड़प्पन दूसरों को बड़ा समझने में ही है।''

अनिल बरतरे

लघु कथा के उदहारण-

1- अहंकारी वृक्ष

सुन्दर घने वन में खड़े एक वृक्ष के साथ लिपटी एक लता धीरे – धीरे वृक्ष के बराबर ऊंची हो गई। वृक्ष का आश्रय पाकर उसने भी फलना – फूलना आरंभ कर दिया। यह सब देखकर वृक्ष अहंकार से भर उठा। उसे लगने लगा कि यदि वह नहीं होता तो लता का अस्तित्व ही न होता।

एक दिन वृक्ष ने उस लता से धमकाते हुए बोला – "सुन! चुपचाप जो मैं कहता हूँ उसे किया कर, वरना धक्के मारकर तुझको भगा दूंगा।" तभी उस रास्ते पर आ रहे दो पथिक वृक्ष की खूबसूरती देखकर रूक गये। एक पथिक अपने दूसरे साथी पथिक से कह रहा था कि – भाई! ये वृक्ष तो अत्यंत सुन्दर लग रहा है, इस पर जो सुंदर बेल पुष्पित हो रही है उसकी वजह से तो ये और भी सुंदर लग रहा है । इसे देख कर तो मेरी बड़ी इच्छा हो रही है की इसके नीचे बैठकर कुछ देर विश्राम करूं।

दूसरा पथिक बोला – हां भाई तुम बिलकुल सत्य कहते हो। यदि इस वृक्ष पर यह बेल पुष्पित न होती तो शायद इस वृक्ष की सुंदरता इतनी नहीं होती। यह वृक्ष भी और वृक्षों की तरह ही केवल छांव देता लेकिन खूबसूरत नहीं दिखता। इस बेल ने इस वृक्ष की सुंदरता को और भी निखार दिया है। चलो यही थोड़ी देर विश्राम करते हैं और इस सुन्दर नज़ारे का आनंद उठाते हैं।

उन दोनों पथिकों की बातें सुनकर वृक्ष का अहंकार चूर-चूर हो गया और वह बड़ा लज्जित हुआ। उसे इस बात का एहसास हो गया कि उस का महत्व लता के साथ है उसके बिना नहीं।

2- मोर की शिकायत

एक बार एक मोर था जो बहुत सुन्दर था, उसके पंख बेहद खूबसूरत थे। एक दिन खूब झम–झम बारिश हुई और मोर नाचने लगा। नाचते हुए वह अपनी खूबसूरती को निहार रहा था, पर अचानक उसका ध्यान उसकी आवाज पर गया, जो कि बेहद बेसुरा और कठोर था। इस बात का एहसास होते ही वह बेहद उदास हो गया और उसके आंखों में आंसू आ गएं। तभी अचानक, उसे एक कोयल गाती हुए सुनाई दी।कोयल की मधुर आवाज को सुनकर, मोर को उसकी कमी एक बार फिर एहसास हुआ। वह सोचने लगा कि भगवान ने उसे सुंदरता तो दी पर बेसुरा क्यों बनाया। तभी एक देवी प्रकट हुई और उन्होंने मोर से पूछा "मोर, तुम क्यों उदास हो?"

मोर ने देवी से अपनी कठोर आवाज के बारे में शिकायत की और उनसे पूछा, "कोयल की आवाज इतनी मीठी है पर मेरी क्यों नहीं? इसलिए मैं दुखी हूँ।

अब मोर की बात सुनकर, देवी ने समझाया, "भगवान के द्वारा सभी का हिस्सा निर्धारित है, हर जीव अपने तरीके से खास होता है। भगवान ने उन्हें अलग–अलग बनाया है और वे एक निश्चित काम के लिए हैं। उन्होंने मोर को सुंदरता दी, शेर को ताकत और कोयल को मीठी आवाज! हमें भगवान के दिए इन उपहारों का सम्मान करना चाहिए और जितना है उतने में ही खुश रहना चाहिए।"देवी की बातों को सुनकर मोर समझ गया कि दूसरों से तुलना नहीं करनी चाहिए बल्कि खुद के हुनर की सराहना करनी चाहिए और उसे और निखारना चाहिए। मोर उस दिन समझा कि हर व्यक्ति किसी न किसी तरह से यूनिक होता है। खुद को स्वीकार करना ही खुशी का पहला कदम है। जो कुछ भी आपके पास नहीं है, उसके लिए दुखी होने के बजाय, आपके पास जो है, उसे स्वीकार करें।

3- दो माली

एक बार, दो पड़ोसी थे, जिनके पास अपना–अपना बागान था और वे उनमें पौधे उगाते थे। उनमें से एक पड़ोसी बहुत सख्त था और अपने पौधों की जरुरत से ज्यादा देखभाल करता था। दूसरा पड़ोसी, उतना ही करता था जितने की आवश्यकता थी, लेकिन वह अपने पौधे की पत्तियों को अपने मन–मर्जी दिशा के बढ़ने देता था।

एक शाम, बहुत बड़ा तूफान आया, जिसमें भारी बारिश हुई। तूफान ने कई पौधों को नष्ट कर दिया। अगली सुबह, जब सख्त पड़ोसी उठा, तो उसने पाया कि उसके सारे पौधे उखड़ गए और बर्बाद हो गए। वहीं, जब दूसरा पड़ोसी उठा, तो उसने पाया कि उसके पौधे अभी भी मिट्टी में मजबूती से लगे हुए हैं, इतने तूफान के बावजूद।

रिलैक्स पड़ोसी का पौधा खुद ही चीजें करना सीख गया था। इसलिए, इसने अपना काम किया, गहरी जड़ें उगाईं, और मिट्टी में अपने लिए जगह बनाई। इस प्रकार, यह तूफान में भी मजबूती से खड़ा रहा। जबकि, उस सख्त पड़ोसी ने अपने पौधों का जरुरत से ज्यादा खयाल रखा था, लेकिन शायद वह भूल गया सिखाना कि बुरे समय में खुद का खयाल कैसे रखते हैं।

अभ्यास कार्य

निम्नलिखित प्रश्तान बिन्दुओं के आधार पर 100 से 120 शब्दों में शीर्षक सहित एक लघुकथा लिखिए ।

एक बूढ़ा किसान था । उसके चारों पुत्र आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। किसान बहुत दुखी था ।बूढा किसान उन्हें बार-बार समझता और आपस मे न झगड़ने की नसीहत भी देता पर उन चारों पर कोई असर नहीं होता। फिर एक दिन उस बूढ़े किसान ने एक उपाय सोचा .....

धन्यवाद